सारां श

जब हम किसी भी समाज की बात करते हैं तो उसके साथ मिथक का बहुत बड़ा भाग किसी न किसी रूप से जुड़ा होता है। वर्तमान युग में वैज्ञानिकता व आधुनिकता की दौड़ से इसका स्वरूप विलुप्त के कगार पर है। परंतु आज भी जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रचलन पाया जाता है। मिथक ग्रामीण समाज से ज्यादा जनजातीय समाज में व्याप्त है, जो इनकी संस्कृति का मूल आधार है। जनजातीय समाज अपना जीवन-यापन प्राकृतिक चीजों और उससे प्राप्त पदार्थों से करते हैं जिसके कारण वे प्रकृति को दैवीय शक्ति का रूप मानते हैं। जनजातीय समाज में मिथक की उत्पत्ति को लेकर बहुत सारें बाते तथाकथित उजागर हुई है, जिसे ये अपनी बौद्धिक विचारों और विश्वासों में संग्रह करके रखे हुए हैं। समय के साथ-साथ मिथकों के स्वरूपों में कई परिवर्तन आये हैं जो अपना मूल रूप बदलकर वर्तमान के कई मान्यताओं और विश्वासों को अपने साथ जोड़ लेता है। वर्तमान अध्ययन में इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए गोंड़ जनजाति की मिथकों के अध्ययन विषय का चुनाव किया गया है।

प्रस्तुत शोध में गोंड़ जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक, शारीरिक, धार्मिक और प्राकृतिक से जुड़े मिथकों के ज्ञान और स्वरुप में हुए बदलाव को जानने का प्रयास किया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि इस जनजाति के लोगों में मिथक से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का प्रचलन में पाया गया है जो कि समाज के एक विशेष वर्ग (बुजुर्गों) में हैं। इन लोगों का मानना है कि मिथकों के विचार और ज्ञान को वर्तमान पीढ़ी विशेषकर युवा वर्ग अपनी मूल संस्कृति में जोड़ने से बिल्कुल रूचि नहीं लेते हैं जिसके कारण से इनके समाज में मिथक अपनी अस्तित्व खोने के कगार पर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में गोंड़ जनजाति के लगभग पच्चीस से तीस मिथक सामने आया हैं जिसका संबंध मानव , प्रकृति व दैवीय शक्ति इत्यादि के साथ है जिसके कारण आज भी गोंड़ जनजाति में लोक विश्वास और मान्यताओं का अटूट संबंध जुड़ा हुआ है । मिथक के इन स्वरूपों में इनकी उत्पत्ति , मृत्यु, गोत्रचिन्ह, वंशचिन्ह, गोदना गुदवाने की परम्परा की शुरुआत , बीमारीयों के प्रति अवधारणाओं से लेकर मुख्य देवी-देवताओं के प्रति आस्था से जुड़े मिथकों की व्याख्या इस शोध में किया गया है । गोंड़ जनजाति के लोग अपना मुख्य देवता बड़ादेव, बूढ़ादेव चूल्हादेव और दूल्हादेव को मानते हैं। इन देवों में सबसे शक्तिशाली और वरिष्ठ देव बड़ादेव होता है , जिसका स्वरुप प्रकृति है जिसमें पाँच तत्व धरती, आकाश, हवा, आग और जल शामिल है। बड़ादेव को इनके द्वारा 'प्रकृति देव' भी कहा जाता है। इसलिए ये लोग प्रकृति पूजा करते हैं जिसमें मिट्टी पूजा (धरती पूजा), साजा पेड़ की पूजा (बड़ा देव) के निवास स्थान मानकर करते हैं । ये लोग अपनी उत्पत्ति सल्ला घाघरा प्रतीक चिन्ह को मानते हैं

जिसका संबंध 'बूढ़ादेव -बूढ़ीदेवी ' से होता है। इसके अनुसार संसार की उत्पत्ति का मुख्य कारण दो अंडे थे । जिसे बूढ़ादेव और बूढ़ीदेवी ने पानी की ऊपरी सतह में दिए जिससे दो जीवों का जन्म हुआ और उस जीव को मिट्टी लाने को कहा मिट्टी लाये लाने के पश्चात बूढ़ादेव और बूढ़ीदेवी ने अंडे के सामान बनाकर पृथ्वी का निर्माण किया। बूढ़ादेव और बूढ़ीदेवी के जिन दो अंडो से बच्चों का जन्म हुआ था वही संतान गोंड़ है। जिसने अपनी जीवन में मिट्टी की पूजा किया और उसी से अपनी जीवकोपार्जन के वस्तुओं को उत्पन्न कर अपनी अस्तिव को बनाये रखा।

वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाली गोंड़ जनजाति अपनी उत्पत्ति, जन्म देने वाली माता-पिता को मानते हैं न कि सल्ला घाघरा (बूढ़ादेव -बूढ़ीदेवी) को। लेकिन आज भी इस जनजाति में सल्ला-घाघरा की प्रतिमा को प्रतीक के रूप में आस्था और विश्वास के साथ पूजा जाता है। आज भी इनके निवास स्थान पर घर के बाहरी दीवारों में प्रतीक के रूप में विद्यमान है । गोंड़ जनजाति में आज भी इनकी मूल संस्कृति की झलक साफ दिखलाई पड़ती है जिसमें मिथकों का स्थान उसके गोत्र चिन्ह और गोदना कला की परम्पराओं में दिखाई देता है। ये सभी सामाजिक स्वरूपों का मुख्य हिस्सा होता है जिससे समाज की निरन्तरता बनी हुई है जिसके फलस्वरूप सामाजिक संबंधों की प्रक्रिया चलता रहता है। समाज में सामाजिक मूल्यों और परम्पराओं का होना भी महत्वपूर्ण होता है। साथ ही लोगों की नैतिकता उसके समाज और राष्ट्र के लिए हमेशा प्रगति की होनी चाहिए जिसमें सभी की भूमिका उसके बौद्धिक विचारों , परम्परागत ज्ञानों , लोक विश्वासों , प्रथागत नियमों , धार्मिक मान्यताओं आदि का समन्वय बहुत आवश्य होता है। वैज्ञानिकता और आधुनिकता की इस दौर में मिथक को समाज का अवरोधक माना जाता है लेकिन समाज को आगे बढ़ाने में मिथकों का योगदान सहारणीय रहा है जिससे अनेक नियमों का प्रतिपादन हुआ जो मुख्य रूप से जनजातीय लोगों में देखने को मिलता है।

अध्ययन से स्पष्ट है कि गोंड़ जनजाति में गोत्र चिन्ह पशु -पक्षी, जीव-जंतु , पेड़-पौधे, जैसे प्राकृतिक तत्व होते हैं जिन्हें किसी भी प्रकार से नुकसान नहीं पहुँचाते , बल्कि उसकी पूजा करते हैं। क्योंकि ये लोग स्वयं को प्रकृति पूजक मानते हैं । महिलाओं के शरीर के अंगो जैसे - हथेली, पैर, नाक, गर्दन, भुजा ठोड़ी में गोदना के रूप में प्राकृतिक जीव-जंतुओं , पेड़-पौधों, एवं देवी -देवता ओं का चित्र प्रतीक चिन्ह के रूप में गुदवाते हैं । गोदना का यह प्रतिरूप उसके शारीरिक सुन्दरता के साथ उसके शारीरिक सुरक्षा भी करती है। सामाजिक नियमों के तौर पर प्रत्येक स्त्रियों में उनके शरीर पर मातृत्व घर से गोदना गुदे होते हैं। अगर किसी स्त्री के शारीरिक अंग में गोदना नहीं होता तो उस स्त्री को समाज में अपवित्र मानी जाती है। वर्तमान में गोदना के प्रति जो जागरूकता और लोक प्रियता है

वह अब समाप्त होने की कगार पर है जिसका मुख्य कारण आधुनिक शारीरिक सौन्दर्यता की सामग्री के साथ गोदना की प्रति रूचि न लेना है । जिसके कारण से इनके मूल नियमों और विश्वासों में बहुत बदलाव आने लगे हैं जिससे ये अपनी संस्कृति की अस्तित्व के साथ मिथक की परम्पराओं को खो रहे हैं।

गोंड़ जनजाति में बीमारियों और त्यौहारों से जुड़े मिथक भी पाए हैं जिसमें देवी-देवता ओं और पूर्वजन्म में किये गए अमानवीय व्यवहार, दुराचार आदि गलत कार्यों से मिले सजा का एक परिणाम माना है। बीमारियों से जुड़े मिथक मुख्य रूप से कुष्ठरोग (Leprosy), छोटीमाता (Chicken-pox), और लकवा (Paralysis) है। इन बीमारियों में से छोटीमाता (chikcen-pox) पर आज भी मिथक की अवधारणा सहेजकर रखा गया है , जबकि अन्य दो बीमारियों में मिथक की जो धारणा है वह अविश्वसनीय होकर समाप्त हो गई है। जिसका संज्ञान केवल दो-तीन बुजुर्गों ने ही सहेज कर रखा हुआ है। त्यौहारों और उन से जुड़े मिथकों में इनकी विश्वसनीयता आज भी पायी गयी है लेकिन इसके पूजा विधि में कुछ बदलाव हो गया है जिसके कारण से अपनी देवी -देवताओं को संतुष्टि कर पाने में असहज महसूस करते हैं। पहले ये लोग कुछ त्यौहारों में पूजा करने के लिए जंगल जाते थे , परन्तु आजकल जंगल पूजा करने नहीं जाकर अपने गाँव के अन्दर गुड़ी देव या घर में उस दैवीय शक्ति का नाम स्मरण करके पूजा कर लेते हैं। बलि प्रथा भी इस जनजाति में समाप्त हो गया है जिसका कारण वर्तमान नियमों और कानून का पालन करना है। इससे पता चलता है कि ये लोग जागरूक हो रहे हैं और अपने आने वाले युवा पीढ़ियों को जागरूक बना रहे हैं जो एक समाज की प्रगति के लिए आवश्यक होता है।

दिशाओं और जीव-जंतुओं से जुड़े मिथकों में आज भी विश्वास तथा मान्यता पाया गया है जिसमें से कुछ मिथकों को नए पीढ़ी के लोग भी अनुस रण करते हैं। इसका कारण रूचि लेना और वर्तमान में हो रहे आकस्मिक घटनाएँ शामिल है। मिथक में लोग वास्तविक रूप का प्रमाण ढूंढने की कोशिश अधिक करते हैं। परन्तु मिथक में एकल और सामूहिक वैचारिकता होती है जो समाज के लोगों में विश्वास और आस्था से जुड़ा रहता है जिसका उपयोग सामाजिक संबंधों , धार्मिक मान्यताओं, लोक विश्वासों, नियमों और परम्पराओं के स्वरूपों को बनाये रखने में किया जाता है